

Para 17

Sipara 17 of 30 · 190 Ayahs · Translation: Hindi

Al-Anbiyaa

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ أَقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ ۚ مُّعْرِضُونَ

लोगों के पास उनका हिसाब (उसका वक्त) आ पहुँचा और वह है कि गफलत में पड़े मुँह मोड़े ही जाते हैं

2

مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ ۚ مِّن رَّبِّهِمْ مُّحَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ

जब उनके परवरदिगार की तरफ से उनके पास कोई नया हुक्म आता है तो उसे सिर्फ कान लगाकर सुन लेते हैं और (फिर उसका) हँसी खेल उड़ाते हैं

3

لَا هِيَاةَ ۚ قُلُوبُهُمْ ۚ وَأَسْرُوا ۚ النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ هَلْ هَذَا إِلَّا بَشْرٌ ۚ مِّثْلُكُمْ ۚ أَفَتَأْتُونَ السَّحَرَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ

उनके दिल (आखिरत के ख्याल से) बिल्कुल बेखबर हैं और ये ज़ालिम चुपके-चुपके कानाफूसी किया करते हैं कि ये शख्स (मोहम्मद कुछ भी नहीं) बस तुम्हारे ही सा आदमी है तो क्या तुम दीन व दानिस्ता जादू में फँसते हो

4

قَالَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

(तो उस पर) रसूल ने कहा कि मेरा परवरदिगार जितनी बातें आसमान और ज़मीन में होती हैं खूब जानता है (फिर क्यों कानाफूसी करते हो) और वह तो बड़ा सुनने वाला वाक्फ़िकार है

5

بَلْ قَالُوا ۚ أَضْغَتْ أَحْلَمُ ۚ بَلْ أَفْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ ۚ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ

(उस पर भी उन लोगों ने इक्तीफ़ा न की) बल्कि कहने लगे (ये कुरान तो) खाबहाय परीशाँ का मजमूआ है बल्कि उसने खुद अपने जी से झूट-मूट गढ़ लिया है बल्कि ये शख्स शायर है और अगर हक़ीकतन रसूल है) तो जिस तरह अगले पैग़म्बर मौजिज़ों के साथ भेजे गए थे

6

مَا ءَامَنْتَ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا ۚ أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ

उसी तरह ये भी कोई मौजिज़ा (जैसा हम कहें) हमारे पास भला लाए तो सही इनसे पहले जिन बस्तियों को तबाह कर डाला (मौजिज़े भी देखकर तो) ईमान न लाए

7

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا ۚ نُّوحِي إِلَيْهِمْ ۚ فَسَلُّوا ۚ أَهْلَ الذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

तो क्या ये लोग ईमान लाएँगे और ऐ रसूल हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को (रसूल बनाकर) भेजा था कि उनके पास "वही" भेजा करते थे तो अगर तुम लोग खुद नहीं जानते हो तो आलिमों से पूँछकर देखो

8

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا ۚ لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوا خَلِدِينَ

और हमने उन (पैग़म्बरों) के बदन ऐसे नहीं बनाए थे कि वह खाना न खाएँ और न वह (दुनिया में) हमेशा रहने सहने वाले थे

9

ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ نَّشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ

फिर हमने उन्हें (अपना अज़ाब का) वायदा सच्चा कर दिखाया (और जब अज़ाब आ पहुँचा) तो हमने उन पैग़म्बरों को और जिस जिसको चाहा छुटकारा दिया और हद से बढ़ जाने वालों को हलाक कर डाला

10

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا ۚ فِيهِ ذِكْرُكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

हमने तो तुम लोगों के पास वह किताब (कुरान) नाज़िल की है जिसमें तुम्हारा (भी) ज़िक्र (ख़ैर) है तो क्या तुम लोग (इतना भी) समझते

11

وَكَمْ قَصَمْنَا مِن قَرْيَةٍ ۚ كَانَتْ ظَالِمَةً ۚ وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا ۚ آخَرِينَ

और हमने कितनी बस्तियों को जिनके रहने वाले सरकश थे बरबाद कर दिया और उनके बाद दूसरे लोगों को पैदा किया

12

فَلَمَّا أَحَسُّوا ۚ بَأْسَنَا إِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُونَ

तो जब उन लोगों ने हमारे अज़ाब की आहट पाई तो एका एकी भागने लगे

13

لَا تَرْكُضُوا ۚ وَأَرْجِعُوا ۚ إِلَىٰ مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ

(हमने कहा) भागो नहीं और उन्हीं बस्तियों और घरों में लौट जाओ जिनमें तुम चैन करते थे ताकि तुमसे कुछ पूछगछ की जाए

14

قَالُوا ۚ يُؤَيَّلْنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ

वह लोग कहने लगे हाए हमारी शामत बेशक हम सरकश तो जरूर थे

15

فَمَا زَالَتْ تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خُمِدِينَ

गरज वह बराबर यही पड़े पुकारा किए यहाँ तक कि हमने उन्हें कटी हुई खेती की तरह बिछा के ठन्डा करके ढेर कर दिया

16

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبِينَ

और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है बेकार लगो नहीं पैदा किया

17

لَوْ أَرَدْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُوًۭا ۖ لَآتَّخَذْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا إِنْ كُنَّا فَعِلِينَ

अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो बेशक हम उसे अपनी तजवीज़ से बना लेते अगर हमको करना होता (मगर हमें शायान ही न था)

18

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ ۚ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ

बल्कि हम तो हक़ को नाहक़ (के सर) पर खींच मारते हैं तो वह बिल्कुल के सर को कुचल देता है फिर वह उसी वक्त नेस्तबेनाबूद हो जाता है और तुम पर अफ़सोस है कि ऐसी-ऐसी नाहक़ बातें बनाये करते हो

19

وَلَهُ ۚ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهُ ۚ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ ۚ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ

हालाँकि जो लोग (फरिश्ते) आसमान और ज़मीन में हैं (सब) उसी के (बन्दे) हैं और जो (फरिश्ते) उस सरकार में हैं न तो वह उसकी इबादत की शेखी करते हैं और न थकते हैं

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْطُرُونَ

रात और दिन उसकी तस्बीह किया करते हैं (और) कभी काहिली नहीं करते

أَمْ اتَّخَذُوا ۚ ءَالِهَةً ۚ مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُونَ

उन लोगों जो माबूद ज़मीन में बना रखे हैं क्या वही (लोगों को) ज़िन्दा करेंगे

لَوْ كَانَ فِيهِمَا ۚ ءَالِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ

अगर बफ़रने मुहाल) ज़मीन व आसमान में खुदा कि सिवा चन्द माबूद होते तो दोनों कब के बरबाद हो गए होते तो जो बातें ये लोग अपने जी से (उसके बारे में) बनाया करते हैं खुदा जो अर्श का मालिक है उन तमाम ऐबों से पाक व पाकीज़ा है

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ

जो कुछ वह करता है उसकी पूछगछ नहीं हो सकती

أَمْ اتَّخَذُوا ۚ مِن دُونِهِ ۚ ءَالِهَةً ۚ ۚ قُلْ هَاتُوا ۚ بُرْهَانَكُمْ ۚ ۚ هَذَا ذِكْرٌ مِّن مَّعِيَ وَذِكْرٌ مِّن قَبْلِي ۚ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۚ ۚ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ

(हाँ) और उन लोगों से बाज़पुर्स होगी क्या उन लोगों ने खुदा को छोड़कर कुछ और माबूद बना रखे हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि भला अपनी दलील तो पेश करो जो मेरे (ज़माने में) साथ है उनकी किताब (कुरान) और जो लोग मुझ से पहले थे उनकी किताबें (तौरित वगैरह) ये (मौजूद) हैं (उनमें खुदा का शरीक बता दो) बल्कि उनमें से अक्सर तो हक़ (बात) को तो जानते ही नहीं

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي ۚ إِلَيْهِ أَنَّهُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا ۚ ۚ فَاعْبُدُونِ

तो (जब हक़ का ज़िक्र आता है) ये लोग मुँह फेर लेते हैं और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल भेजा तो उसके पास "वही" भेजते रहे कि बस हमारे सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं तो मेरी इबादत किया करो

وَقَالُوا ۖ أَتَتَّخِذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۗ ا ۚ سُبْحٰنَهُ ۚ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ

और (अहले मक्का) कहते हैं कि खुदा ने (फरिश्तों को) अपनी औलाद (बेटियाँ) बना रखा है (हालाँकि) वह उससे पाक व पकीज़ा है बल्कि (वह फ़रिश्ते) (खुदा के) मोअज्ज़ि बन्दे हैं

لَا يَسْبِقُونَهُ ۚ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ ۚ يَعْمَلُونَ

ये लोग उसके सामने बढ़कर बोल नहीं सकते और ये लोग उसी के हुक्म पर चलते हैं

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِ ۚ مُشْفِقُونَ

जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है (गरज़ सब कुछ) वह (खुदा) जानता है और ये लोग उस शख्स के सिवा जिससे खुदा राज़ी हो किसी की सिफारिश भी नहीं करते और ये लोग खुद उसके खौफ से (हर वक्त) डरते रहते हैं

ۚ وَمَن يَّقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهُ ۚ مِّنْ دُونِهِ ۚ فَذٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ

और उनमें से जो कोई ये कह दे कि खुदा नहीं (बल्कि) मैं माबूद हूँ तो वह (मरदूद बारगाह हुआ) हम उसको जहन्नुम की सज़ा देंगे और सरकशों को हम ऐसी ही सज़ा देते हैं

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا ۚ فَفَتَقْنَاهُمَا ۚ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۚ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ

जो लोग काफिर हो बैठे क्या उन लोगों ने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि आसमान और ज़मीन दोनों बस्ता (बन्द) थे तो हमने दोनों को शिगाफ़ता किया (खोल दिया) और हम ही ने जानदार चीज़ को पानी से पैदा किया इस पर भी ये लोग ईमान न लाएँगे

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوٰسِي ۚ أَن تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا ۚ سُبُلًا ۚ لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ

और हम ही ने ज़मीन पर भारी बोझल पहाड़ बनाए ताकि ज़मीन उन लोगों को लेकर किसी तरफ झुक न पड़े और हम ने ही उसमें लम्बे-चौड़े रास्ते बनाए ताकि ये लोग अपने-अपने मंज़िलें मक़सूद को जा पहुँचे

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۚ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ

और हम ही ने आसमान को छत बनाया जो हर तरह महफूज़ है और ये लोग उसकी आसमानी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۚ كُلٌّ فِي فَلَكٍ ۚ يَسْبَحُونَ

और वही वह (क्रादिरे मुत्तलिक) है जिसने रात और दिन और आफ़ताब और माहताब को पैदा किया कि सब के सब एक (एक) आसमान में पैर कर चक्कर लगा रहे हैं

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۚ أَفَإِن مَّتَّ فَهُمْ الْخُلْدُونَ

और (ऐ रसूल) हमने तुमसे पहले भी किसी फ़र्दे बशर को सदा की ज़िन्दगी नहीं दी तो क्या अगर तुम मर जाओगे तो ये लोग हमेशा जिया ही करेंगे

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۚ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۚ وَاللَّيْنَا تُرْجَعُونَ

(हर शख्स एक न एक दिन) मौत का मज़ा चखने वाला है और हम तुम्हें मुसीबत व राहत में इम्तिहान की गरज़ से आजमाते हैं और (आख़िकार) हमारी ही तरफ लौटाए जाओगे

وَإِذَا رَأَاكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوءًا أَهْذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمَنِ هُمْ كَافِرُونَ

और (ऐ रसूल) जब तुम्हें कुफ़रार देखते हैं तो बस तुमसे मसखरापन करते हैं कि क्या यही हज़रत हैं जो तुम्हारे माबूदों को (बुरी तरह) याद करते हैं हालाँकि ये लोग खुद खुदा की याद से इन्कार करते हैं (तो इनकी बेवकूफी पर हँसना चाहिए)

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُورِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ

आदमी तो बड़ा जल्दबाज़ पैदा किया गया है मैं अनक़रीब ही तुम्हें अपनी (कुदरत की) निशानियाँ दिखाऊँगा तो तुम मुझसे जल्दी की (हूँ) न मचाओ

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

और लुत्फ़ तो ये है कि कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो ये क़यामत का वायदा कब (पूरा) होगा

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

और जो लोग काफ़िर हो बैठे काश उस वक्त क़ी हालत से आगाह होते (कि जहन्नुम की आग में खड़े होंगे) और न अपने चेहरों से आग को हटा सकेंगे और न अपनी पीठ से और न उनकी मदद की जाएगी

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً ۚ فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ

(क़यामत कुछ जता कर तो आने से रही) बल्कि वह तो अचानक उन पर आ पड़ेगी और उन्हें हक्का बक्का कर देगी फिर उस वक्त उसमें न उसके हटाने की मजाल होगी और न उन्हें ही दी जाएगी

وَلَقَدْ أَسْتَهْزِئُ بِرُسُلٍ ۚ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا ۚ مِنْهُمْ مَا كَانُوا ۚ بِهِ ۚ يَسْتَهْزِئُونَ

और (ऐ रसूल) कुछ तुम ही नहीं तुमसे पहले पैग़म्बरों के साथ मसख़रापन किया जा चुका है तो उन पैग़म्बरों से मसख़रापन करने वालों को उस सख्त अज़ाब ने आ घेर लिया जिसकी वह हँसी उड़ाया करते थे

قُلْ مَنْ يَكْلُوْكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ۚ ۚ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُونَ

(ऐ रसूल) तुम उनसे पूछो तो कि खुदा (के अज़ाब) से (बचाने में) रात को या दिन को तुम्हारा कौन पहरा दे सकता है उस पर डरना तो दरकिनार बल्कि ये लोग अपने परवरदिगार की याद से मुँह फेरते हैं

أَمْ لَهُمْ ءَالِهَةٌ ۚ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُونِنَا ۚ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُونَ

क्या हमरो सिवा उनके कुछ और परवरदिगार हैं कि जो उनको (हमारे अज़ाब से) बचा सकते हैं (वह क्या बचाएँगे) ये लोग खुद अपनी आप तो मदद कर ही नहीं सकते और न हमारे अज़ाब से उन्हें पनाह दी जाएगी

بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وِءَابَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ
نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ

बल्कि हम ही ने उनको और उनके बुर्जुगों को आराम व चैन रहा यहाँ तक कि उनकी उम्रें बढ़ गई तो फिर क्या ये लोग नहीं देखते कि हम रूए ज़मीन को चारों तरफ से क़ब्ज़ा करते और उसको फतेह करते चले आते हैं तो क्या (अब भी यही लोग कुफ़ारे मक्का) ग़ालिब और वर हैं

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۚ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं तो बस तुम लोगों को "वही" के मुताबिक़ (अज़ाब से) डराता हूँ (मगर तुम लोग गोया बहरे हो) और बहरों को जब डराया जाता है तो वह पुकारने ही को नहीं सुनते (डरें क्या खाक)

وَلِئِنْ مَسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ ۚ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يُوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ

और (ऐ रसूल) अगर कहीं उनको तुम्हारे परवरदिगार के अज़ाब की ज़रा सी हवा भी लग गई तो वे सख्त ! बोल उठे हाय अफसोस वाकई हम ही ज़ालिम थे

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ ۚ شَيْءًا ۚ وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ
حَبَّةٍ ۚ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۚ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ

और क़यामत के दिन तो हम (बन्दों के भले बुरे आमाल तौलने के लिए) इन्साफ़ की तराजू में खड़ी कर देंगे तो फिर किसी शख्स पर कुछ भी ज़ुल्म न किया जाएगा और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का (अमल) होगा तो तुम उसे ला हाज़िर करेंगे और हम हिसाब करने के वास्ते बहुत काफ़ी हैं

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً ۚ وَذِكْرًا ۚ لِلْمُتَّقِينَ

और हम ही ने यक़ीनन मूसा और हारून को (हक़ व बातिल की) जुदा करने वाली किताब (तौरत) और परहेज़गारों के लिए अज़सरतापा बनूँ और नसीहत अता की

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ

जो वे देखे अपने परवरदिगार से खौफ खाते हैं और ये लोग रोज़े क़यामत से भी डरते हैं

50

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنْزَلْنَاهُ ۖ أَفَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ

और ये (कुरान भी) एक बाबरकत तज़क़िरा है जिसको हमने उतारा है तो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते

51

ۚ وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ ۖ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ

और इसमें भी शक नहीं कि हमने इबराहीम को पहले ही से फ़हेम सलीम अता की थी और हम उन (की हालत) से खूब वाकिफ थे

52

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ ۖ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी क़ौम से कहा ये मूर्ते जिनकी तुम लोग मुजाबिरी करते हो आखिर क्या (बला) है

53

قَالُوا ۖ وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عَابِدِينَ

वह लोग बोले (और तो कुछ नहीं जानते मगर) अपने बड़े बूढ़ों को इनही की परसतिश करते देखा है

54

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَءَابَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ

इबराहीम ने कहा यकीनन तुम भी और तुम्हारे बुर्जुग भी खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे

55

قَالُوا ۖ أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ

वह लोग कहने लगे तो क्या तुम हमारे पास हक़ बात लेकर आए हो या तुम भी (यूँ ही) दिल्लगी करते हो

56

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ وَأَنَا ۖ عَلَىٰ ذَلِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ

इबराहीम ने कहा मज़ाक नहीं ठीक कहता हूँ कि तुम्हारे माबूद व बुत नहीं बल्कि तुम्हारा परवरदिगार आसमान व ज़मीन का मालिक है जिसने उनको पैदा किया और मैं खुद इस बात का तुम्हारे सामने गवाह हूँ

57

وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا ۖ مُدْبِرِينَ

और अपने जी में कहा खुदा की क़सम तुम्हारे पीठ फेरने के बाद मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक चाल चलाऊँगा

فَجَعَلَهُمْ جُذًا إِلَّا كَبِيرًا ۚ لَّهُمْ لَعَلُّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ

चुनान्चे इबराहीम ने उन बुतों को (तोड़कर) चकनाचूर कर डाला मगर उनके बड़े बुत को (इसलिए) रहने दिया) ताकि ये लोग ईद से पलटकर उसकी तरफ रूजू करें

قَالُوا ۚ مَنْ فَعَلَ هَذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ ۚ لَمِنَ الظَّالِمِينَ

(जब कुफ़ार को मालूम हुआ) तो कहने लगे जिसने ये गुस्ताखी हमारे माबूदों के साथ की है उसने यक़ीनी बड़ा जुल्म किया

قَالُوا ۚ سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ ۚ إِبْرَاهِيمُ

(कुछ लोग) कहने लगे हमने एक नौजवान को जिसको लोग इबराहीम कहते हैं उन बुतों का (बुरी तरह) ज़िक्र करते सुना था

قَالُوا ۚ فَأْتُوا ۚ بِهِ ۚ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ

लोगों ने कहा तो अच्छा उसको सब लोगों के सामने (गिरफ्तार करके) ले आओ ताकि वह (जो कुछ कहें) लोग उसके गवाह रहें

قَالُوا ۚ ءَأَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ

(गरज़ इबराहीम आए) और लोगों ने उनसे पूछा कि क्यों इबराहीम क्या तुमने माबूदों के साथ ये हरकत की है

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ ۚ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَسَلُّوهُمْ إِنْ كَانُوا ۚ يَنْطِقُونَ

इबराहीम ने कहा बल्कि ये हरकत इन बुतों (खुदाओं) के बड़े (खुदा) ने की है तो अगर ये बुत बोल सकते हों तो उनही से पूछ देखो

فَرَجَعُوا ۚ إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا ۚ إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ

इस पर उन लोगों ने अपने जी में सोचा तो (एक दूसरे से) कहने लगे बेशक तुम ही लोग खुद बर सरे नाहक हो

ثُمَّ نَكِسُوا؟ عَلَى رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ

फिर उन लोगों के सर इसी गुमराही में झुका दिए गए (और तो कुछ बन न पड़ा मगर ये बोले) तुमको तो अच्छी तरह मालूम है कि ये बुत बोला नहीं करते

قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْءٌ؟ وَلَا يَضُرُّكُمْ

(फिर इनसे क्या पूछे) इबराहीम ने कहा तो क्या तुम लोग खुदा को छोड़कर ऐसी चीजों की परसतिश करते हो जो न तुम्हें कुछ नफा ही पहुँचा सकती है और न तुम्हारा कुछ नुकसान ही कर सकती है

أَفِ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ؟ أَفَلَا تَعْقِلُونَ

तफ है तुम पर उस चीज़ पर जिसे तुम खुदा के सिवा पूजते हो तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते

قَالُوا؟ حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا؟ ءَالِهَتَكُمْ إِن كُنْتُمْ فَعِلِينَ

(आखिर) वह लोग (बाहम) कहने लगे कि अगर तुम कुछ कर सकते हो तो इबराहीम को आग में जला दो और अपने खुदाओं की मदद करो

قُلْنَا يَنَارُ كُونِي بَرْدًا؟ ا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ

(गरज़) उन लोगों ने इबराहीम को आग में डाल दिया तो हमने फ़रमाया ऐ आग तू इबराहीम पर बिल्कुल ठन्डी और सलामती का बाइस हो जा

وَأَرَادُوا؟ بِهِ؟ كَيْدًا؟ ا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَخْسَرِينَ

(कि उनको कोई तकलीफ़ न पहुँचे) और उन लोगों में इबराहीम के साथ चालबाज़ी करनी चाही थी तो हमने इन सब को नाकाम कर दिया

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ

और हम ने ही इबराहीम और लूत को (सरकशों से) सही व सालिम निकालकर इस सर ज़मीन (शाम बैतुलमुक़द्दस) में जा पहुँचाया जिसमें हमने सारे जहाँन के लिए तरह-तरह की बरकत अता की थी

وَوَهَبْنَا لَهُ ۖ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۚ وَكَلًّا ۚ جَعَلْنَا صُلْحِينَ

और हमने इबराहीम को इनाम में इसहाक (जैसा बैटा) और याकूब (जैसा पोता) इनायत फरमाया हमने सबको नेक बख्त बनाया

وَجَعَلْنَاهُمْ أُمَّةً ۚ يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ
الزَّكَاةِ ۚ وَكَانُوا لَنَا عُبْدِينَ

और उन सबको (लोगों का) पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से (उनकी) हिदायत करते थे और हमने उनके पास नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने की "वही" भेजी थी और ये सब के सब हमारी ही इबादत करते थे

وَلُوطًا ءَاتَيْنَاهُ حُكْمًا ۚ وَعِلْمًا ۚ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْخَبِيثَ ۚ إِنَّهُمْ
كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ ۚ فَسَقِينَ

और लूत को भी हम ही के फ़हमे सलीम और नबूवत अता की और हम ही ने उस बस्ती से जहाँ के लोग बदकारियाँ करते थे नजात दी इसमें शक नहीं कि वह लोग बड़े बदकार आदमी थे

وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا ۚ إِنَّهُ ۚ مِنَ الصَّالِحِينَ

और हमने लूत को अपनी रहमत में दाखिल कर लिया इसमें शक नहीं कि वह नेकोंकार बन्दों में से थे

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۚ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ ۚ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ

और (ऐ रसूल लूत से भी) पहले (हमने) नूह को नबूवत पर फ़ायज़ किया जब उन्होंने (हमको) आवाज़ दी तो हमने उनकी (दुआ) सुन ली फिर उनको और उनके साथियों को (तूफ़ान की) बड़ी सख्त मुसीबत से नजात दी

وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ ۚ فَأَغْرَقْنَاهُمْ
أَجْمَعِينَ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनके मुकाबले में उनकी मदद की बेशक ये लोग (भी) बहुत बुरे लोग थे तो हमने उन सबको डुबो मारा

وَدَاؤُۥدَۙ وَسُلَيْمٰنَۙ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِى الْحَرِّۙ اِذْ نَفَسَتْ فِیْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِیۡنَ

और (ऐ रसूल इनको) दाऊद और सुलेमान का (वाक्या याद दिलाओ) जब ये दोनों एक खेती के बारे में जिसमें रात के वक्त कुछ लोगों की बकरियाँ (घुसकर) चर गई थी फैसला करने बैठे और हम उन लोगों के किस्से को देख रहे थे (कि बाहम इखतेलाफ़ हुआ)

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَۙ وَكُلًّاۙ اَتَيْنَا حُكْمًاۙ اَعْلَمَّاۙ وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُۥدَۙ الْجِبَالَۙ یُسَبِّحْنَ وَالطَّیْرَۙ وَكُنَّا فٰعِلِیۡنَ

तो हमने सुलेमान को (इसका सही फैसला समझा दिया) और (यूँ तो) सबको हम ही ने फहमे सलीम और इल्म अता किया और हम ही ने पहाड़ों को दाऊद का ताबेए बना दिया था कि उनके साथ (खुदा की) तस्बीह किया करते थे और परिन्दों को (भी) ताबेए कर दिया था) और हम ही (ये अज़ाब) किया करते थे

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍۙ لَّکُمْ لِتُحْصِنَکُمْ مِّنْۢ بَّاسِکُمْۙ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰکِرُوۡنَ

और हम ही ने उनको तुम्हारी जंगी पोशिश (ज़िराह) का बनाना सिखा दिया ताकि तुम्हें (एक दूसरे के) वार से बचाए तो क्या तुम (अब भी) उसके शुक्रगुज़ार बनोगे

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّیْحَ عَاصِفَةًۙ تَجْرِیۡ بِاَمْرِہٖۙ اِلَی الْاَرْضِ الَّتِیۡ بُرْکْنَا فِیْہَاۙ وَكُنَّا بِکُلِّ شَیْءٍ عٰلَمِیۡنَ

और (हम ही ने) बड़े ज़ोरों की हवा को सुलेमान का (ताबेए कर दिया था) कि वह उनके हुक्म से इस सरज़मीन (बैतुलमुक़द्दस) की तरफ चला करती थी जिसमें हमने तरह-तरह की बरकतें अता की थी और हम तो हर चीज़ से खूब वाकिफ़ थे (और) है

وَمِنَ الشَّیْطٰنِۙ مَن یَّغْوِیُّوۡنَ لَہٗۙ وَیَعْمَلُوۡنَ عَمَلًاۙ اَدُوۡنَ ذٰلِکَۙ وَكُنَّا لَہُمْ حٰفِظِیۡنَ

और जिन्नात में से जो लोग (समन्दर में) गोता लगाकर (जवाहरात निकालने वाले) थे और उसके अलावा और काम भी करते थे (सुलेमान का ताबेए कर दिया था) और हम ही उनके निगेहबान थे

﴿۱﴾ وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ ﴿۲﴾ أَنِّي مَسْنِيَ الضُّرِّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِمِينَ

(कि भाग न जाएँ) और (ऐ रसूल) अय्यूब (का क्रिस्सा याद करो) जब उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (खुदा वन्द) बीमारी तो मेरे पीछे लग गई है और तू तो सब रहम करने वालोंसे (बढ़ कर है मुझ पर तरस खा)

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ﴿۳﴾ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ ﴿۴﴾ مِنْ ضُرٍّ ﴿۵﴾ وَءَاتَيْنَاهُ أَهْلَهُ ﴿۶﴾ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً ﴿۷﴾
مِّنْ عِنْدِنَا وَذَكَرَىٰ لِلْعَبِيدِ

तो हमने उनकी दुआ कुबूल की तो हमने उनका जो कुछ दर्द दुख था दफ़ा कर दिया और उन्हें उनके लड़के वाले बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी महज़ अपनी खास मेहरबानी से और इबादत करने वालों की इबरत के वास्ते अता किए

وَإِسْمَاعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ﴿۱﴾ كُلٌّ مِّنَ الصَّابِرِينَ

और (ऐ रसूल) इसमाईल और इदरीस और जुलकिफल (के वाक़यात से याद करो) ये सब साबिर बन्दे थे

وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ﴿۲﴾ إِنَّهُمْ مِّنَ الصَّالِحِينَ

और हमने उन सबको अपनी (खास) रहमत में दाखिल कर लिया बेशक ये लोग नेक बन्दे थे

وَذَا النُّونِ إِذْ ذَهَبَ مُغْضِبٌ ﴿۱﴾ فَظَنَّ أَن لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

और जुन्नून (यूनुस को याद करो) जबकि गुस्से में आकर चलते हुए और ये ख्याल न किया कि हम उन पर रोज़ी तंग न करेंगे (तो हमने उन्हें मछली के पेट में पहुँचा दिया) तो (घटाटोप) अंधेरे में (घबराकर) चिल्ला उठा कि (परवरदिगार) तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू (हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है बेशक मैं कुसूरवार हूँ

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ﴿۲﴾ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ ﴿۳﴾ وَكَذَلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ

तो हमने उनकी दुआ कुबूल की और उन्हें रंज से नजात दी और हम तो ईमानवालों को यूँ ही नजात दिया करते हैं

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ ۖ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا ۖ وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ

और ज़करिया (को याद करो) जब उन्होंने (मायूस की हालत में) अपने परवरदिगार से दुआ की ऐ मेरे पालने वाले मुझे तन्हा (बे औलाद) न छोड़ और तू तो सब वारिसों से बेहतर है

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ ۖ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَا لَهُ ۖ زَوْجَهُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ
فِي الْخَيْرِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا لَنَا خَشِعِينَ

तो हमने उनकी दुआ सुन ली और उन्हें यहया सा बेटा अता किया और हमने उनके लिए उनकी बीबी को अच्छी बता दिया इसमें शक नहीं कि ये सब नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको बड़ी रग़बत और खौफ के साथ पुकारा करते थे और हमारे आगे गिड़गिड़ाया करते थे

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا ءَايَةً ۖ لِلْعَالَمِينَ

और (ऐ रसूल) उस बीबी को (याद करो) जिसने अपनी अज़मत की हिफाज़त की तो हमने उन (के पेट) में अपनी तरफ से रूह फूँक दी और उनको और उनके बेटे (ईसा) को सारे जहाँ के वास्ते (अपनी कुदरत की) निशानी बनाया

إِنَّ هَذِهِ ۖ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً ۖ وَحِدَةً ۖ وَأَنَا ۖ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ

बेशक ये तुम्हारा दीन (इस्लाम) एक ही दीन है और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ तो मेरी ही इबादत करो

وَتَقَطَّعُوا ۖ أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ إِلَيْنَا رُجْعُونَ

और लोगों ने बाहम (इख़तेलाफ़ करके) अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला (हालाँकि) वह सब के सब हिरफिर के हमारे ही पास आने वाले हैं

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۖ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهِ ۖ وَإِنَّا لَهُ ۖ كَاتِبُونَ

(उस वक्त फ़ैसला हो जाएगा कि) तो जो शख्स अच्छे-अच्छे काम करेगा और वह ईमानवाला भी हो तो उसकी कोशिश अकारत न की जाएगी और हम उसके आमाल लिखते जाते हैं

وَحَرَّمْ عَلَى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ

और जिस बस्ती को हमने तबाह कर डाला मुमकिन नहीं कि वह लोग क़यामत के दिन हिरफिर के से (हमारे पास) न लौटे

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِّن كُلِّ حَدَبٍ ۖ يَنْسِلُونَ

बस इतना (तवक्कुफ़ तो ज़रूर होगा) कि जब याजूज माजूज (सद्दे सिकन्दरी) की कैद से खोल दिए जाएँगे और ये लोग (ज़मीन की) हर बुलन्दी से दौड़ते हुए निकल पड़े

وَأَقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَخِصَةٌ أَبْصَرُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُوَلِّنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ ۖ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ

और क़यामत का सच्चा वायदा नज़दीक आ जाए तो फिर काफ़िरों की आँखें एक दम से पथरा दी जाएँ (और कहने लगे) हाय हमारी शामत कि हम तो इस (दिन) से ग़फलत ही में (पड़े) रहे बल्कि (सच तो यूँ है कि अपने ऊपर) हम आप ज़ालिम थे

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَرَدُونَ

(उस दिन किहा जाएगा कि ऐ कुफ़्फ़ार) तुम और जिस चीज़ की तुम खुदा के सिवा परसतिश करते थे यक़ीनन जहन्नुम की ईधन (जलावन) होंगे (और) तुम सबको उसमें उतरना पड़ेगा

لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ ءَالِهَةً ۖ مَا وَرَدُوهَا ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ

अगर ये (सच्चे) माबूद होते तो उन्हें दोज़ख में न जाना पड़ता और (अब तो) सबके सब उसी में हमेशा रहेंगे

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ ۖ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ

उन लोगों की दोज़ख में चिंघाड़ होगी और ये लोग (अपने शोर व गुल में) किसी की बात भी न सुन सकेंगे

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُوْلَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ

ज़बान अलबत्ता जिन लोगों के वास्ते हमारी तरफ से पहले ही भलाई (तक़दीर में लिखी जा चुकी) वह लोग दोज़ख से दूर ही दूर रखे जाएँगे

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۚ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَلِدُونَ

(यहाँ तक) कि ये लोग उसकी भनक भी न सुनेंगे और ये लोग हमेशा अपनी मनमाँगी मुरादों में (चैन से) रहेंगे

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ

और उनको (क़यामत का) बड़े से बड़ा खौफ़ भी दहशत में न लाएगा और फ़रिश्ते उन से खुशी-खुशी मुलाक़ात करेंगे और ये खुशख़बरी देंगे कि यही वह तुम्हारा (खुशी का) दिन है जिसका (दुनिया में) तुमसे वायदा किया जाता था

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ ۖ نُعِيدُهُ ۖ وَوَعْدًا عَلَيْنَا ۖ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ

(ये) वह दिन (होगा) जब हम आसमान को इस तरह लपेटेंगे जिस तरह खतों का तूमार लपेटा जाता है जिस तरह हमने (मखलूक़ात को) पहली बार पैदा किया था (उसी तरह) दोबारा (पैदा) कर छोड़ेंगे (ये वह) वायदा (है जिसका करना) हम पर (लाज़िम) है और हम उसे ज़रूर करके रहेंगे

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ ۖ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ

और हमने तो नसीहत (तौरैत) के बाद यक़ीनन जुबूर में लिख ही दिया था कि रूए ज़मीन के वारिस हमारे नेक बन्दे होंगे

إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاغًا ۖ لِقَوْمٍ عٰبِدِينَ

इसमें शक नहीं कि इसमें इबादत करने वालों के लिए (एहकामें खुदा की) तबलीग़ है

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً ۖ لِلْعٰلَمِينَ

और (ऐ रसूल) हमने तो तुमको सारे दुनिया जहाँ के लोगों के हक़ में अज़सरतापा रहमत बनाकर भेजा

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ ۖ وَحْدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ

तुम कह दो कि मेरे पास तो बस यही "वही" आई है कि तुम लोगों का माबूद बस यकता खुदा है तो क्या तुम (उसके) फरमाबरदार बन्दे बनते हो

فَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَقُلْ ءَاذَنْتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ ۙ وَإِنْ أَدْرَىٰٓ أَقْرَبُ أَمْ بَعِيدُ ۚ مَا تُوعَدُونَ

फिर अगर ये लोग (उस पर भी) मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मैंने तुम सबको एकसाँ खबर कर दी है और मैं नहीं जानता कि जिस (अज़ाब) का तुमसे वायदा किया गया है करीब आ पहुँचा या (अभी) दूर है

إِنَّهُ ۚ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ

इसमें शक नहीं कि वह उस बात को भी जानता है जो पुकार कर कही जाती है और जिसे तुम लोग छिपाते हो उससे भी खूब वाकिफ है

وَإِنْ أَدْرَىٰٓ لَعَلَّهُ ۚ فِتْنَةٌ ۚ لَكُمْ وَمَتَّعَ إِلَىٰ حِينٍ ۚ

और मैं ये भी नहीं जानता कि शायद ये (ताखीरे अज़ाब तुम्हारे) वास्ते इम्तिहान हो और एक मुअय्युन मुदत तक (तुम्हारे लिए) चैन हो

قُلْ رَبِّ أَحْكُم بِالْحَقِّ ۚ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ

(आखिर) रसूल ने दुआ की ऐ मेरे पालने वाले तू ठीक-ठीक मेरे और काफिरों के दरमियान फैसला कर दे और हमार परवरदिगार बड़ा मेहरबान है कि उसी से इन बातों में मदद माँगी जाती है जो तुम लोग बयान करते हो

Al-Hajj

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا ۚ رَبَّكُمُ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۚ

ऐ लोगों अपने परवरदिगार से डरते रहो (क्योंकि) क़यामत का ज़लज़ला (कोई मामूली नहीं) एक बड़ी (सख्त) चीज़ है

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَرَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۚ

जिस दिन तुम उसे देख लोगे तो हर दूध पिलाने वाली (डर के मारे) अपने दूध पीते (बच्चे) को भूल जायेगी और सारी हामला औरते अपने-अपने हमल (बेहिश्त से) गिरा देगी और (घबराहट में) लोग तुझे मतवाले मालूम होंगे हालाँकि वह मतवाले नहीं हैं बल्कि खुदा का अज़ाब बहुत सख्त है कि लोग बदहवास हो रहे हैं

3

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ ۚ

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो बग़ैर जाने खुदा के बारे में (स्वाह म स्वाह) झगड़ते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे हो लेते हैं

4

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ ۖ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ ۖ يُضِلُّهُ ۖ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ

जिन (की पेशानी) के ऊपर (खते तक्रदीर से) लिखा जा चुका है कि जिसने उससे दोस्ती की हो तो ये यक़ीनन उसे गुमराह करके छोड़ेगा और दोज़ख के अज़ाब तक पहुँचा देगा

5

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ ۖ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن تُرَابٍ ۖ ثُمَّ مِّن نُّطْفَةٍ ۖ ثُمَّ مِّنْ عَلَقَةٍ ۖ ثُمَّ مِّن مُّضْغَةٍ ۖ مُّخَلَّقَةٍ ۖ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ ۖ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۖ وَنُقَرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ۖ ثُمَّ لِّتَبْلُغُوا ۖ أَشَدَّكُمْ ۖ وَمِنْكُمْ مَّن يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن ۖ بَعْدِ عِلْمٍ ۖ شَيْءٌ ۖ وَتَرَىٰ الْأَرْضَ هَامِدَةً ۖ فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأُنۢزِلَت مِّن كُلِّ زَوْجٍ ۖ بَهِيجٍ ۖ

लोगों अगर तुमको (मरने के बाद) दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो इसमें शक नहीं कि हमने तुम्हें शुरू-शुरू मिट्टी से उसके बाद नुत्फे से उसके बाद जमे हुए खून से फिर उस लोथड़े से जो पूरा (सूडौल हो) या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर (अपनी कुदरत) ज़ाहिर करें (फिर तुम्हारा दोबारा ज़िन्दा) करना क्या मुश्किल है और हम औरतों के पेट में जिस (नुत्फे) को चाहते हैं एक मुद्दत मुअय्यन तक ठहरा रखते हैं फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर (तुम्हें पालते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुममें से कुछ लोग तो ऐसे हैं जो (कब्ल बुढ़ापे के) मर जाते हैं और तुम में से कुछ लोग ऐसे हैं जो नाकारा ज़िन्दगी बुढ़ापे तक फेर लाए हैं जातें ताकि समझने के बाद सठिया के कुछ भी (खाक) न समझ सके और तो ज़मीन को मुर्दा (बेकार उफ़तादा) देख रहा है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने और उभरने लगती है और हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगती है तो ये कुदरत के तमाशे इसलिए दिखाते हैं ताकि तुम जानो

6

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ ۖ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ ۖ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

कि बेशक खुदा बरहक़ है और (ये भी कि) बेशक वही मुर्दों को जिलाता है और वह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है

7

وَأَنَّ السَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ ۖ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ

और क़यामत यक़ीनन आने वाली है इसमें कोई शक नहीं और बेशक जो लोग क़ब्रों में हैं उनको खुदा दोबारा ज़िन्दा करेगा

8

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَلَا هُدًى ۖ وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۖ

और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो बेजाने बूझे बे हिदायत पाए बग़ैर रौशन किताब के (जो उसे राह बताए) खुदा की आयतों से मुँह मोड़े

9

ثَانِيَ عِطْفِهِ ۖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۖ لَهُ ۖ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَنَذِيقُهُ ۖ يَوْمَ
الْقِيَمَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ

(ख्वाहमख्वाह) खुदा के बारे में लड़ने मरने पर तैयार है ताकि (लोगों को) खुदा की राह बहका दे ऐसे (नाबकार) के लिए दुनिया में (भी) रूसवाई है और क़यामत के दिन (भी) हम उसे जहन्नुम के अज़ाब (का मज़ा) चखाएँगे

10

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَاكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَمٍ ۖ لِلْعَبِيدِ

और उस वक्त उससे कहा जाएगा कि ये उन आमाल की सज़ा है जो तेरे हाथों ने पहले से किए हैं और बेशक खुदा बन्दों पर हरगिज़ जुल्म नहीं करता

11

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ ۖ فَإِنْ أَصَابَهُ ۖ خَيْرٌ أَطْمَأَنَّ بِهِ ۖ وَإِنْ
أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ أُنْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۖ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۖ ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ
الْمُبِينُ

और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो एक किनारे पर (खड़े होकर) खुदा की इबादत करता है तो अगर उसको कोई फायदा पहुँच गया तो उसकी वजह से मुतमईन हो गया और अगर कहीं उस कोई मुसीबत छू भी गयी तो (फौरन) मुँह फेर के (कुफ़्र की तरफ़) पलट पड़ा उसने दुनिया और आखेरत (दोनों) का घाटा उठाया यही तो सरीही घाटा है

12

يَدْعُوا ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ ۖ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ۖ ۖ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَلُ الْبَعِيدُ

खुदा को छोड़कर उन चीज़ों को (हाज़त के वक्त) बुलाता है जो न उसको नुक़सान ही पहुँचा सकते हैं और न कुछ नफा ही पहुँचा सकते हैं

يَدْعُوا ۚ لَمَنْ ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ ۚ لِبَيْسٍ الْمَوْلَىٰ وَلِبَيْسِ الْعَشِيرُ

यही तो पल्ले दरने की गुमराही है और उसको अपनी हाजत रवाई के लिए पुकारता है जिस का नुकसान उसके नफे से ज्यादा करीब है बेशक ऐसा मालिक भी बुरा और ऐसा रफीक भी बुरा

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ جَنَّٰتٍ ۚ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको (खुदा बेहश्त के) उन (हरे-भरे) बागात में ले जाकर दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी बेशक खुदा जो चाहता है करता है

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَّنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لِيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ ۚ مَا يَغِیْظُ

जो शख्स (गुस्से में) ये बदगुमानी करता है कि दुनिया और आखेरत में खुदा उसकी हरगिज मदद न करेगा तो उसे चाहिए कि आसमान तक रस्सी ताने (और अपने गले में फाँसी डाल दे) फिर उसे काट दे (ताकि घुट कर मर जाए) फिर देखिए कि जो चीज़ उसे गुस्से में ला रही थी उसे उसकी तद्बीर दूर दफ़ा कर देती है

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَاهُ ءَايَاتٍ ۚ بَيِّنَاتٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يُرِيدُ

(या नहीं) और हमने इस कुरान को यूँ ही वाजेए व रौशन निशानियाँ (बनाकर) नाज़िल किया और बेशक खुदा जिसकी चाहता है हिदायत करता है

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَالَّذِينَ هَادُوا ۚ وَالصَّبِيْنَ وَالنَّصْرَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ ۚ شَهِيدٌ

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया (मुसलमान) और यहूदी और लामज़हब लोग और ईसाई और मजूसी (आतिशपरस्त) और मुशरेकीन (कुफ़ार) यकीनन खुदा उन लोगों के दरमियान क़यामत के दिन (ठीक ठीक) फ़ैसला कर देगा इसमें शक नहीं कि खुदा हर चीज़ को देख रहा है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ ۚ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۚ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ
الْعَذَابُ ۚ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ ۚ مِنْ مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۚ

क्या तुमने इसको भी नहीं देखा कि जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं और आफताब और माहताब और सितारे और पहाड़ और दरख्त और चारपाए (गरज़ कुल मखलूक़ात) और आदमियों में से बहुत से लोग सब खुदा ही को सज्जदा करते हैं और बहुतेरे ऐसे भी हैं जिन पर नाफ़रमानी की वजह से अज़ाब का (का आना) लाज़िम हो चुका है और जिसको खुदा ज़लील करे फिर उसका कोई इज़्जत देने वाला नहीं कुछ शक नहीं कि खुदा जो चाहता है करता है (18) सज्जदा

ۚ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا ۚ فِي رَبِّهِمْ ۚ فَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ قُطِعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ ۚ مِّنْ
نَّارٍ ۚ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ

ये दोनों (मोमिन व काफ़िर) दो फरीक़ हैं आपस में अपने परवरदिगार के बारे में लड़ते हैं गरज़ जो लोग काफ़िर हो बैठे उनके लिए तो आग के कपड़े केता किए गए हैं (वह उन्हें पहनाए जाएँगे और) उनके सरों पर खौलता हुआ पानी उँडेला जाएगा

يُصْهِرُ بِهِ ۚ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ

जिस (की गर्मी) से जो कुछ उनके पेट में है (आँतें वग़ैरह) और खालें सब गल जाएँगी

وَلَهُمْ مَّقْمِعٌ مِّنْ حَدِيدٍ ۚ

और उनके (मारने के) लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا ۚ مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا ۚ فِيهَا وَذُوقُوا ۚ عَذَابَ الْحَرِيقِ

कि जब सदमों के मारे चाहेंगे कि दोज़ख़ से निकल भागें तो (गुर्ज़ मार के) फिर उसके अन्दर ढकेल दिए जाएँगे और (उनसे कहा जाएगा कि) जलाने वाले अज़ाब के मज़े चखो

23

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ جَنَّٰتٍ ۖ تَجْرِى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ ۚ وَلُؤْلُؤًا ۚ ۝۱ ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۚ

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अच्छे काम भी किए उनको खुदा बेहشت के ऐसे हरे-भरे बागों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहरे जारी होगी उन्हें वहाँ सोने के कंगन और मोती (के हार) से सँवारा जाएगा और उनका लिबास वहाँ रेशमी होगा

24

وَهُدُوا ۚ إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا ۚ إِلَى صِرَاطٍ الْحَمِيدِ

और (ये इस वजह से कि दुनिया में) उन्हें अच्छी बात (कलमाए तौहीद) की हिदायत की गई और उन्हें सज़ावारे हम्द (खुदा) का रास्ता दिखाया गया

25

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ
سَوَاءً الْعُكْفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ ۝۱ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ ۚ بِظُلْمٍ ۚ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۚ

बेशक जो लोग काफिर हो बैठे और खुदा की राह से और मस्जिदें मोहतरम (खानए काबा) से जिसे हमने सब लोगों के लिए (माबद) बनाया है (और) इसमें शहरी और बेरूनी सबका हक बराबर है (लोगों को) रोकते हैं (उनको) और जो शख्स इसमें शरारत से गुमराही करे उसको हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखा देंगे

26

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا ۚ وَطَهَّرَ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ
وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब हमने इबराहीम के ज़रिये से इबराहीम के वास्ते खानए काबा की जगह ज़ाहिर कर दी (और उनसे कहा कि) मेरा किसी चीज़ को शरीक न बनाना और मेरे घर को तवाफ और क़याम और रूकू सुजूद करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखना

27

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا ۚ ۝۱ ۚ وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ ۚ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ
عَمِيقٍ ۚ

और लोगों को हज की खबर कर दो कि लोग तुम्हारे पास (ज़ूक दर ज़ूक) ज्यादा और हर तरह की दुबली (सवारियों पर जो राह दूर दराज़ तय करके आयी होगी चढ़-चढ़ के) आ पहुँचेंगे

لِيَشْهَدُوا؟ مَنَعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا؟ اُسْمِ اللّٰهِ فِيْ اَيَّامٍ مَّعْلُوْمَتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ؟
بِهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ؟ فَكُلُوْا؟ مِنْهَا وَاَطْعِمُوْا؟ الْبَائِسَ الْفَقِيْرَ

ताकि अपने (दुनिया व आखिरत के) फायदे पर फायज़ हों और खुदा ने जो जानवर चारपाए उन्हें अता फ़रमाए उनपर (ज़िबाह के वक्त) चन्द मुअय्युन दिनों में खुदा का नाम लें तो तुम लोग कुरबानी के गोश्त खुद भी खाओ और भूखे मोहताज़ को भी खिलाओ

ثُمَّ لِيَقْضُوا ۖ تَفْتَهُمْ وَلِيُفُؤُوا ۖ نَذُورَهُمْ وَلِيَطَّوُّفُوا ۖ بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ

फिर लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी (बदन की) कसाफ़त दूर करें और अपनी नज़रें पूरी करें और क़दीम (इबादत) ख़ानए काबा का तवाफ़ करें यही हुक्म है

ذَلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ۖ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ وَأُحِلَّتْ لَكُمْ الْآَنَعَمُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۚ فَاجْتَنِبُوا ۚ الرَّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا ۚ قَوْلَ الزُّورِ

और इसके अलावा जो शख्स खुदा की हुस्मत वाली चीज़ों की ताज़्जीम करेगा तो ये उसके पवरदिगार के यहाँ उसके हक्क में बेहतर है और उन जानवरों के अलावा जो तुमसे बयान किए जाएंगे कुल चारपाए तुम्हारे वास्ते हलाल किए गए तो तुम नापाक बुतों से बचे रहो और लगो बातें गाने वगैरह से बचे रहो

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ
الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۚ

निर खरे अल्लाह के होकर (रहो) उसका किसी को शरीक न बनाओ और जिस शख्स ने (किसी को) खुदा का शरीक बनाया तो गोया कि वह आसमान से गिर पड़ा फिर उसको (या तो दरमियान ही से) कोई (मुरदा ख्ववार) चिड़िया उचक ले गई या उसे हवा के झोंके ने बहुत दूर जा फेंका

ذٰلِكَ وَمَنْ يُعِظْ شَعْرًا اَللّٰهُ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوٰى الْقُلُوْبِ

ये (याद रखो) और जिस शख्स ने खुदा की निशानियों की ताज़ीम की तो कुछ शक नहीं कि ये भी दिलों की परहेज़गारी से हासिल होती है

لَكُمْ فِيهَا مَنَفَعٌ إِلَىٰ أَجَلٍ ۖ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ

और इन चार पायों में एक मुअय्युन मुदत तक तुम्हारे लिये बहुत से फायदे हैं फिर उनके ज़िबाह होने की जगह क़दीम (इबादत) खानए काबा है

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ ۖ جَعَلْنَا مَنَسَكًا ۖ لِّيَذْكُرُوا ۚ اَسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيمَةٍ
الْأَنْعَمِ ۚ فَالْهُكُمُ لِلَّهِ ۚ وَحِدٌ ۚ فَلَهُ ۚ أَسْلِمُوا ۚ ۚ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ

और हमने तो हर उम्मत के वास्ते कुरबानी का तरीका मुक़रर कर दिया है ताकि जो मवेशी चारपाए खुदा ने उन्हें अता किए हैं उन पर (ज़िबाह के वक्त) खुदा का नाम ले ग़रज़ तुम लोगों का माबूद (वही) यकता खुदा है तो उसी के फरमाबरदार बन जाओ

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي الصَّلَاةِ
وَمِمَّا رَزَقْنَهُمْ يُنفِقُونَ

और (ऐ रसूल हमारे) गिड़गिड़ाने वाले बन्दों को (बेहशत की) खुशख़बरी दे दो ये वह हैं कि जब (उनके सामने) खुदा का नाम लिया जाता है तो उनके दिल सहम जाते हैं और जब उनपर कोई मुसीबत आ पड़े तो सब्र करते हैं और नमाज़ पाबन्दी से अदा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से (राहे खुदा में) खर्च करते हैं

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ ۚ فَاذْكُرُوا ۚ اَسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا
صَوَافٍ ۚ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا ۚ مِنْهَا وَأَطْعِمُوا ۚ الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَلِكَ
سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

और कुरबानी (मोटे गदबदे) ऊँट भी हमने तुम्हारे वास्ते खुदा की निशानियों में से क़रार दिया है इसमें तुम्हारी बहुत सी भलाईयाँ हैं फिर उनका ताँते का ताँता बाँध कर ज़िबाह करो और उस वक्त उन पर खुदा का नाम लो फिर जब उनके दस्त व बाजू काटकर गिर पड़े तो उन्हीं से तुम खुद भी खाओ और केनाअत पेशा फ़कीरों और माँगने वाले मोहताजों (दोनों) को भी खिलाओ हमने यूँ इन जानवरों को तुम्हारा ताबेए कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो

لَنْ يَنَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا ۚ اللَّهُ عَلَىٰ مَا هَدَيْكُمْ ۚ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ

खुदा तक न तो हरगिज़ उनके गोشت ही पहुँचेंगे और न खून मगर (हाँ) उस तक तुम्हारी परहेज़गारी अलबत्ता पहुँचेंगी खुदा ने जानवरों को (इसलिए) यूँ तुम्हारे काबू में कर दिया है ताकि जिस तरह खुदा ने तुम्हें बनाया है उसी तरह उसकी बड़ाई करो

ۚ إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ ۚ كَفُورٍ

और (ऐ रसूल) नेकी करने वालों को (हमेशा की) खुशखबरी दे दो इसमें शक नहीं कि खुदा ईमानवालों से कुफ़ार को दूर दफा करता रहता है खुदा किसी बददयानत नाशुक्के को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ

जिन (मुसलमानों) से (कुफ़ार) लड़ते थे चूँकि वह (बहुत) सताए गए उस वजह से उन्हें भी (जिहाद) की इजाज़त दे दी गई और खुदा तो उन लोगों की मदद पर यकीनन कादिर (वत वाना) है

الَّذِينَ أُخْرِجُوا ۚ مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا ۚ رَبُّنَا اللَّهُ ۚ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ ۚ لَهْذِمَتْ صَوْمِعُ وَبَيْعٌ ۚ وَصَلَوَاتٌ ۚ وَمَسْجِدٌ يُذَكِّرُ فِيهَا أَسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ

ये वह (मज़लूम हैं जो बेचारे) सिर्फ़ इतनी बात कहने पर कि हमारा परवरदिगार खुदा है (नाहक़) अपने-अपने घरों से निकाल दिए गये और अगर खुदा लोगों को एक दूसरे से दूर दफा न करता रहता तो गिरजे और यहूदियों के इबादत खाने और मजूस के इबादतखाने और मस्जिद जिनमें कसरत से खुदा का नाम लिया जाता है कब के कब ढहा दिए होते और जो शरख़ खुदा की मदद करेगा खुदा भी अलबत्ता उसकी मदद ज़रूर करेगा बेशक़ खुदा ज़रूर ज़बरदस्त ग़ालिब है

الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ وَءَاتَوْا ۚ الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا ۚ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا ۚ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَلِلَّهِ عَقِبَةُ الْأُمُورِ

ये वह लोग हैं कि अगर हम इन्हें रूए ज़मीन पर काबू दे दे तो भी यह लोग पाबन्दी से नमाजे अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे-अच्छे काम का हुक्म करेंगे और बुरी बातों से (लोगों को) रोकेंगे और (यूँ तो) सब कामों का अन्जाम खुदा ही के एख्तेयार में है

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۖ وَعَادٌ ۖ وَثَمُودُ

और (ऐ रसूल) अगर ये (कुफ़ार) तुमको झुठलाते हैं तो कोई ताज्जुब की बात नहीं उनसे पहले नूह की क्रौम और (क्रौमे आद और समूद)

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۚ

और इबराहीम की क्रौम और लूत की क्रौम

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ ۚ وَكَذَّبَ مُوسَىٰ فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ

और मदीयन के रहने वाले (अपने-अपने पैगम्बरों को) झुठला चुके हैं और मूसा (भी) झुठलाए जा चुके हैं तो मैंने काफिरों को चन्द ढील दे दी फिर (आखिर) उन्हें ले डाला तो तुमने देखा मेरा अज़ाब कैसा था

فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئْسَ ۚ مُعْتَلَّةٌ ۚ وَقَصْرٌ ۚ مَشِيدٌ

गरज़ कितनी बस्तियाँ हैं कि हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और वह सरकश थीं पस वह अपनी छतों पर ढही पड़ी हैं और कितने बेकार (उजड़े हुए) और कितने) मज़बूत बड़े-बड़े ऊँचे महल (वीरान हो गए)

أَفَلَمْ يَسِيرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ فَتَكُونَ لَهُمْ قُلُوبٌ ۚ يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ ءَاذَانٌ ۚ يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَىٰ الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَىٰ الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

क्या ये लोग रूए ज़मीन पर चले फिर नहीं ताकि उनके लिए ऐसे दिल होते हैं जैसे हक़ बातों को समझते या उनके ऐसे कान होते जिनके ज़रिए से (सच्ची बातों को) सुनते क्योंकि आँखें अंधी नहीं हुआ करती बल्कि दिल जो सीने में है वही अन्धे हो जाया करते हैं

47

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ ۚ
مِّمَّا تَعُدُّونَ

और (ऐ रसूल) तुम से ये लोग अज़ाब के जल्द आने की तमन्ना रखते हैं और खुदा तो हरगिज़ अपने वायदे के खिलाफ नहीं करेगा और बेशक (क़यामत का) एक दिन तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार बरस के बराबर है

48

وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ أُمْلِيتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَإِلَى الْمَصِيرِ

और कितनी बस्तियाँ हैं कि मैंने उन्हें (चन्द) मोहलत दी हालाँकि वह सरकश थी फिर (आखिर) मैंने उन्हें ले डाला और (सबको) मेरी तरफ लौटना है

49

قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا ۚ لَكُمْ نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि लोगों में तो सिर्फ तुमको खुल्लम-खुल्ला (अज़ाब से) डराने वाला हूँ

50

فَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

पस जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए (आखिरत में) उनके लिए बख्शिश है और बेहिश्त की बहुत उम्दा रोज़ी

51

وَالَّذِينَ سَعَوْا ۚ فِي ءَايَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۚ أُو۟لَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जिन लोगों ने हमारी आयतों (के झुठलाने में हमारे) आजिज़ करने के वास्ते कोशिश की यही लोग तो जहन्नुमी हैं

52

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ ۚ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ ۚ
فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ ءَايَتِهِ ۚ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

और (ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी भेजा तो ये ज़रूर हुआ कि जिस वक्त उसने (तबलीगो एहकाम की) आरज़ू की तो शैतान ने उसकी आरज़ू में (लोगों को बहका कर) खलल डाल दिया फिर जो वस वसा शैतान डालता है खुदा उसे बेट देता है फिर अपने एहकाम को मज़बूत करता है और खुदा तो बड़ा वाक्फिकार दाना है

53

لِيَجْعَلَ مَا يُلْقَى الشَّيْطَانُ فِتْنَةً ۚ لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ ۚ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ ۚ بَعِيدٍ ۚ

और शैतान जो (वसवसा) डालता (भी) है तो इसलिए ताकि खुदा उसे उन लोगों के आजमाइश (का ज़रिया) करार दे जिनके दिलों में (कुफ्र का) मर्ज है और जिनके दिल सख्त हैं और बेशक (ये) ज़ालिम मुशरेकीन पल्ले दरजे की मुखालेफ़त में पड़े हैं

54

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا ۚ بِهِ ۚ فَتُخْبِتَ لَهُ ۚ قُلُوبُهُمْ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادٍ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ

और (इसलिए भी) ताकि जिन लोगों को (कुतूबे समावी का) इल्म अता हुआ है वह जान लें कि ये (वही) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से ठीक ठीक (नाज़िल) हुई है फिर (ये ख्याल करके) इस पर वह लोग ईमान लाए फिर उनके दिल खुदा के सामने आजिज़ी करें और इसमें तो शक ही नहीं कि जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया उनकी खुदा सीधी राह तक पहुँचा देता है

55

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فِي مَرِيَةٍ ۚ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَقِيمٍ

और जो लोग काफिर हो बैठे वह तो कुरान की तरफ से हमेशा शक ही में पड़े रहेंगे यहाँ तक कि क़यामत यकायक उनके सर पर आ मौजूद हो या (यूँ कहो कि) उनपर एक सख्त मनहूस दिन का अज़ाब नाज़िल हुआ

56

الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ ۚ لِلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا ۚ الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ

उस दिन की हुकूमत तो ख़ास खुदा ही की होगी वह लोगों (के बाहमी एख्तेलाफ) का फ़ैसला कर देगा तो जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे काम किए हैं वह नेअमतों के (भरे) हुए बाग़ात (बेहश्त) में रहेंगे

57

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۚ

और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो यही वह (कम्बख्त) लोग हैं

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا ۖ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا ۖ أَوْ مَاتُوا ۖ لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا
حَسَنًا ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ

जिनके लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है जिन लोगों ने खुदा की राह में अपने देस छोड़े फ़िर शहीद किए गए या (आप अपनी मौत से) मर गए खुदा उन्हें (आखिरत में) ज़रूर उम्दा रोज़ी अता फ़रमाएगा

لِيُدْخِلَنَّهُمْ مُدْخَلًا ۖ يَرْضَوْنَهُ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ

और बेशक तमाम रोज़ी देने वालों में खुदा ही सबसे बेहतर है वह उन्हें ज़रूर ऐसी जगह (बेहिशत) पहुँचा देगा जिससे वह निहाल हो जाएँगे

ۖ ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ۖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ
غَفُورٌ

और खुदा तो बेशक बड़ा वाकिफ़कार बुर्दवार है यही (ठीक) है और जो शख्स (अपने दुश्मन को) उतना ही सताए जितना ये उसके हाथों से सताया गया था उसके बाद फिर (दोबारा दुश्मन की तरफ़ से) उस पर ज्यादाती की जाए तो खुदा उस मज़लूम की ज़रूर मदद करेगा

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۖ بَصِيرٌ

बेशक खुदा बड़ा माफ़ करने वाला बख़शने वाला है ये (मदद) इस वजह से दी जाएगी कि खुदा (बड़ा क़ादिर है वही) तो रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और इसमें भी शक नहीं कि खुदा सब कुछ जानता है

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ ۖ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ
الْكَبِيرُ

(और) इस वजह से (भी) कि यक़ीनन खुदा ही बरहक़ है और उसके सिवा जिनको लोग (वक्ते मुसीबत) पुकारा करते हैं (सबके सब) बातिल हैं और (ये भी) यक़ीनी (है कि) खुदा ही (सबसे) बुलन्द मर्तबा बुर्जुग़ है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۗ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۙ

अरे क्या तूने इतना भी नहीं देखा कि खुदा ही आसमान से पानी बरसाता है तो ज़मीन सर सब्ज़ (व शादाब) हो जाती है बेशक खुदा (बन्दों के हाल पर) बड़ा मेहरबान वाक्किफ़कार है

لَهُ ۙ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है और इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा (सबसे) बेपरवाह (और) सज़ावार हम्द है

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلُكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَّءُوفٌ ۙ رَحِيمٌ ۙ

क्या तूने उस पर भी नज़र न डाली कि जो कुछ रूप ज़मीन में है सबको खुदा ही ने तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है और कश्ती को (भी) जो उसके हुक्म से दरिया में चलती है और वही तो आसमान को रोके हुए है कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर (जब) उसका हुक्म होगा (तो गिर पड़ेगा) इसमें शक नहीं कि खुदा लोगों पर बड़ा मेहरबान व रहमवाला है

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۗ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۙ

और वही तो क़ादिर मुत्तलिक है जिसने तुमको (पहली बार माँ के पेट में) जिला उठाया फिर वही तुमको मार डालेगा फिर वही तुमको दोबारा ज़िन्दगी देगा

لِكُلِّ أُمَّةٍ ۖ جَعَلْنَا مَنَسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ ۚ فَلَا يُنْزِعُ عَنْكَ فِي الْأَمْرِ ۙ ۖ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى ۙ مُسْتَقِيمٌ ۙ

इसमें शक नहीं कि इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है (ऐ रसूल) हमने हर उम्मत के वास्ते एक तरीक़ा मुकर्रर कर दिया कि वह इस पर चलते हैं फिर तो उन्हें इस दीन (इस्लाम) में तुम से झगड़ा न करना चाहिए और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ बुलाए जाओ

وَإِنْ جَدَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ

बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो और अगर (इस पर भी) लोग तुमसे झगड़ा करें तो तुक कह दो कि जो कुछ तुम कर रहे हो खुदा उससे खूब वाकिफ़ है

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

जिन बातों में तुम बाहम झगड़ा करते थे क़यामत के दिन खुदा तुम लोगों के दरमियान (ठीक) फ़ैसला कर देगा

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ

(ऐ रसूल) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है खुदा यक़ीनन जानता है उसमें तो शक नहीं कि ये सब (बातें) किताब (लौहे महफूज़) में (लिखी हुई मौजूद) हैं

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ ۚ سُلْطٰنًا ۚ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ ۚ عِلْمٌ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۚ

बेशक ये (सब कुछ) खुदा पर आसान है और ये लोग खुदा को छोड़कर उन लोगों की इबादत करते हैं जिनके लिए न तो खुदा ही ने कोई सनद नाज़िल की है और न उस (के हक़ होने) का खुद उन्हें इल्म है और क़यामत में तो ज़ालिमों का कोई मददगार भी नहीं होगा

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۚ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ الْمُنْكَرَ ۚ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۚ قُلْ أَفَأَنْبِيَكُمْ بِشَرٍّ ۚ مِّنْ ذٰلِكُمْ ۚ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَبَشِّرَ الْمَصِيرُ

और (ऐ रसूल) जब हमारी वाज़ेए व रौशन आयतें उनके सामने पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम (उन) काफ़िरों के चेहरों पर नाखुशी के (आसार) देखते हो (यहाँ तक कि) क़रीब होता है कि जो लोग उनको हमारी आयातें पढ़कर सुनाते हैं उन पर ये लोग हमला कर बैठे (ऐ रसूल) तुम कह दो (कि) तो क्या मैं तुम्हें इससे भी कहीं बदतर चीज़ बता दूँ (अच्छा) तो सुन लो वह जहन्नुम है जिसमें झोंकने का वायदा खुदा ने काफ़िरों से किया है

يَأْيُهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ ۚ فَاسْتَمِعُوا ۚ لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا ۚ وَلَوْ اجْتَمَعُوا ۚ لَهُ ۚ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ

और वह क्या बुरा ठिकाना है लोगों एक मसल बयान की जाती है तो उसे कान लगा के सुनो कि खुदा को छोड़कर जिन लोगों को तुम पुकारते हो वह लोग अगरचे सब के सब इस काम के लिए इकट्ठे भी हो जाएँ तो भी एक मक्खी तक पैदा नहीं कर सकते और कहीं मक्खी कुछ उनसे छीन ले जाए तो उससे उसको छुड़ा नहीं सकते (अजब लुत्फ है) कि माँगने वाला (आबिद) और जिससे माँग लिया (माबूद) दोनों कमज़ोर हैं

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ

खुदा की जैसे कद्र करनी चाहिए उन लोगों ने न की इसमें शक नहीं कि खुदा तो बड़ा ज़बरदस्त ग़ालिब है

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا ۖ وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ ۚ بَصِيرٌ ۚ

खुदा फरिश्तों में से बाज़ को अपने एहकाम पहुँचाने के लिए मुन्तख़िब कर लेता है

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

और (इसी तरह) आदमियों में से भी बेशक खुदा (सबकी) सुनता देखता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका है) (खुदा सब कुछ) जानता है

يَأْيُهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اِرْكَعُوا ۚ وَاسْجُدُوا ۚ وَاعْبُدُوا ۚ رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا ۚ الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۚ

और तमाम उमूर की रूजू खुदा ही की तरफ होती है ऐ ईमानवालों रूकू करो और सजदे करो और अपने परवरदिगार की इबादत करो और नेकी करो

وَجَاهِدُوا ۚ فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ وَآتُوا ۚ الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا ۚ بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ

ताकि तुम कामयाब हो और जो हक़ जिहाद करने का है खुदा की राह में जिहाद करो उसी ने तुमको बरगुज़ीदा किया और उमूरे दीन में तुम पर किसी तरह की सख्ती नहीं की तुम्हारे बाप इबराहीम ने मजहब को (तुम्हारा मज़हब बना दिया उसी (खुदा) ने तुम्हारा पहले ही से मुसलमान (फरमाबरदार बन्दे) नाम रखा और कुरान में भी (तो जिहाद करो) ताकि रसूल तुम्हारे मुकाबले में गवाह बने और तुम पाबन्दी से नामज़ पढ़ा करो और ज़कात देते रहो और खुदा ही (के एहकाम) को मज़बूत पकड़ो वही तुम्हारा सरपरस्त है तो क्या अच्छा सरपरस्त है और क्या अच्छा मददगार है